नीतीश कुमार और विपक्ष

बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार भले ही राष्ट्रपति चुनाव में अपनी भूमिका को लेकर कांग्रेस और आरजेडी के निशाने पर हों, लेकिन अपोजिशन की भूमिका को लेकर उन्होंने जो टिप्पणी की है, उस पर सभी विपक्षी दलों को ग भीरता से विचार करना चाहिए। नीतीश ने कहा कि सरकार के काम पर प्रतिक्रिया देना विपक्ष का धर्म जरूर है, लेकिन उसे सिर्फ यहीं तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि अपना एक वैकल्पिक अजेंडा भी रखना चाहिए। उन्होंने कहा कि कांग्रेस एक बड़ी पार्टी है। उसे अजेंडा तय करना चाहिए और जनता को बताना चाहिए कि उसके सामने देश को आगे ले जाने की क्या योजना है। नीतीश एक सुलझे हुए राजनेता हैं और वक्त की नजाकत को वे खूब समझते हैं। पिछले कुछ समय से उनकी चर्चा इस रूप में हो रही है कि उन्होंने राष्ट्रपति पद के लिए एनडीए के उम्मीदवार रामनाथ कोविंद का समर्थन कर बीजेपी से निकटता बढ़ाने की कोशिश की है। राज्य में अपनी सत्ता को सुरक्षित रखने की गरज में उन्होंने विपक्षी एकता को कमजोर किया है। ये आरोप सही हो सकते हैं, लेकिन विपक्ष की अकेली समस्या नीतीश ही तो नहीं हैं। मोदी सरकार के अब तक के कार्यकाल में विपक्ष लगभग निष्क्रिय, विभाजित और दिशाहीन दिखा है। अभी तक उसकी कुल भूमिका अपनी ओर से कोई स्टैंड लेने के बजाय मोदी सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों का विरोध करने की ही रही है। विरोध प्रदर्शनों में भी अलग-अलग दलों के अलग-अलग सुर देखने को मिले। जब जनता के भीतर से स्वतःस्फूर्त आंदोलन निकला तब भी विपक्ष उसके साथ जमकर खड़ा नहीं दिखा। महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश के किसान आंदोलनों को जब एक निश्चित दिशा देने की जरूरत थी, तब कांग्रेस के नेता राहुल गांधी छुट्टी पर चले गए। नीतीश इस बात को महसूस कर रहे हैं कि अपोजिशन फिलहाल केंद्र सरकार को चुनौती देने की स्थिति में नहीं है। ऐसे में एक मुख्यमंत्री के रूप में केंद्र सरकार की नाराजगी मोल लेकर अपनी विकास योजनाओं को फंड के अभाव में दम तोड़ते देखने में उन्हें कोई समझदारी नजर नहीं आती। संभव है, इसी मजबूरी को वे सिद्धांत का रूप दे रहे हों, लेकिन विपक्ष के नजरिये से देखें तो भी उनकी बात अतार्किक या हानिकर तो नहीं ही है। नीतीश का नजरिया मोदी सरकार को संख्याबल के आधार पर चुनौती देने के बजाय उसके कार्यक्रमों की काट करने का है। यह भी कि अगर सरकार का कोई कार्यक्रम देशहित में है, तो विपक्ष को उसका समर्थन भी करना चाहिए। नोटबंदी और जीएसटी का समर्थन उन्होंने इसी तर्क के आधार पर किया। उन्होंने भांप लिया है कि गैर-कांग्रेसवाद या गैर-बीजेपीवाद का दौर देश में अर्सा पहले खत्म हो चुका है। विपक्ष भी इस सच्चाई को मानकर अपना अजेंडा तय करे तो इसमें कोई हर्ज नहीं है।

युवाओं को तरजीह बचाएगी खेती

भारत में एक विमर्श व्यापक स्तर पर है कि कृषि को पुनर्जीवित कैसे किया जाए। हालिया किसान आंदोलनों ने इस मुद्दे की तरफ ध्यान खींचा है। देखा जाए तो कृषि इस देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है लेकिन जिस प्रकार से हमारी सरकारों ने कई दशकों से किसान की अनदेखी की है, उसकी वजह से किसानी-समस्या मुख्य मुद्दा कभी नहीं बन सका। नतीजतन यह फायदे का सौदा कभी नहीं बन सका। यही कारण है कि युवाओं में कृषि के प्रति कभी भी आकर्षण नहीं रहा। एक अध्ययन के अनुसार केवल दो फीसदी किसानों के बच्चे ही कृषि को अपना पेशा बनाना चाहते हैं। इसकी आहट हमें 2011 की जनगणना से भी मिलती है, जिसमें प्रतिदिन 2000 किसानों के खेती छोड़ने की बात कही गई है। खेती से जुड़े युवाओं द्वारा कृषि से दूर होने की कई वजहें हैं। पहला किसानों की उपेक्षा अभी तक जारी है जबकि एनसीआरबी लगातार किसानों के आत्महत्या के बढ़ते आंकड़ों से सरकार को सचेत करता रहा है। दूसरा, युवाओं को कृषि एक रोजगार के रूप में लुभाने में नाकाम रही है। हालत यह है कि कृषि को अपना कैरियर चुनने के बाद भी युवाओं को रोजगार नसीब नहीं हो रहा है। राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) जैसी कई संस्थाएं कृषि के छात्रों को नहीं बल्कि प्रबंधन के छात्रों को रोजगार दे रही हैं। फिर सवाल यह है कि इन कृषि विश्वविद्यालयों का क्या औचित्य है? कृषि अनुसंधान विकास के नाम पर छात्रों को दाखिला तो देते हैं लेकिन पढ़ाई के बाद हकीकत में इनका उपयोग नहीं किया जाता। फलतः कृषि में डिग्री हासिल करने वाले ये युवा अन्य व्यवसाय अपनाने को मजबूर हैं। निःसंदेह वर्तमान कृषि की हालत को बेहतर किये बिना इसमें युवाओं की भागीदारी की संकल्पना महज एक स्वप्न ही साबित होने वाली है। दरअसल सरकार की आर्थिक नीति और 2022 तक आय को दोगुनी करने के वादे में बड़ा विरोधाभास है। नेशनल सैंपल सर्वे की मानें तो 2012-13 में किसानों की औसत मासिक आय 6,426 रुपये थी जबकि भारत सरकार के आर्थिक सर्वेक्षण 2016 के मुताबिक किसानों की आय 1700 रुपये है। इस प्रकार देखें तो किसानों की आय में 4,726 रुपये की गिरावट आई है। इसके मुताबिक 2022 तक किसानों की आय 3400 रुपये रह जाएगी। सवाल यह है कि क्या सरकार आय को दोगुनी करना चाहती है या आधी? अगर सरकार चाहती है कि कृषि क्षेत्र में युवाओं की भागीदारी संतोषजनक स्तर तक पहुंचे तो उसे कुछ विशेष कदम उठाने होंगे। सबसे पहले कृषि संस्थानों में कृषि के छात्रों के लिए रोजगार सुनिश्चित कर कृषि प्रतिभा पलायन पर रोक लगानी होगी। इन संस्थानों में कृषि के छात्रों को वरीयता देने के लिए उनके लिए सीटों को आरक्षित करना होगा ताकि कृषि को कैरियर बनाने वाले छात्रों को रोजगार की सुरक्षा मिल सके। रोजगार सृजन के दूसरे उपाय भी हैं। इसके लिए भारतीय प्रशासनिक सेवा और भारतीय वन सेवा की तर्ज पर अलग से भारतीय कृषि सेवा प्रारंभ करनी होगी। इससे न केवल कृषि विनियामक तंत्र सुदृढ़ होगा बल्कि कृषि अध्ययन करने वाले छात्रों का भी कृषि में प्रशासनिक सेवा जैसे बड़े पदों पर बैठने का सपना पूरा हो सकेगा। साथ ही सरकार को ऐसी योजना बनानी होगी कि छात्रों को उर्वरकों और कीटनाशकों के विपणन और आपूर्ति के लिए लाइसेंस प्रदान किया जा सके। ऐसे प्रशिक्षण की भी आवश्यकता है जो छात्रों को बाजार का व्यावहारिक ज्ञान भी दे सके और वे ऐसे खाद्य पदार्थों का उत्पादन कर सकें, जिनमें कम भूमि, जल और निवेश का उपयोग हो। कृषि को व्यवसाय के रूप में अपनाने वालों के लिए कृषि को फायदे का सौदा बनाना होगा। इसके लिए महज नीतियों के उपयुक्त क्रियान्वयन की आवश्यकता है। स्वामीनाथन कमेटी की सिफारिशों को धरातल पर उतारना होगा। सरकार यदि चाहती है कि उपज का उचित मूल्य मिले तो वादे के मुताबिक लागत का डेढ़ गुना देकर किसानों की हालत को बेहतर करने की दिशा में एक अच्छा कदम उठा सकती है। बहरहाल, सरकार को यह समझना होगा कि एक 'चकाचौंध इंडिया' के साथ-साथ एक 'बदहाल भारत' भी है जहां के किसान हमारे अन्नदाता होने के बावजूद एक मोहताज जिन्दगी जीने को बेबस हैं, जिसके फलस्वरूप आने वाले समय में कृषि का अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाएगा।

डॉक्टरों की दिक्कत

डॉक्टर्स डे पर इंडियन मेडिकल असोसिएशन ने एक सर्वे करके बताया है कि देश में तीन चौथाई से ज्यादा डॉक्टर स्ट्रेस में हैं। 62.8 प्रतिशत डॉक्टरों को मरीज देखते डर लगता है, 57 फीसद डॉक्टर प्राइवेट सिक्यॉरिटी लेना चाहते हैं, जबकि 46 फीसद हिंसा से डरे हुए हैं। आईएमए ने यह सर्वे 15 दिनों में 1681 डॉक्टरों पर किया। सभी डॉक्टरी के अलग-अलग क्षेत्रों से थे और ज्यादातर प्राइवेट सेक्टर में थे। हिंसा से डरने वालों में 24.2 प्रतिशत को मुकदमे का डर सताता है, जबकि 13.7 प्रतिशत डॉक्टरों को लगता है कि उन पर आपराधिक मामले ठोक दिए जाएंगे। 56 फीसदी डॉक्टर सात घंटे की नींद भी नहीं ले पा रहे हैं। हालांकि सारी गलती मरीजों या उनके रिश्तेदारों की नहीं है। आईएमए ने इससे पहले भी एक रिसर्च कराई थी, जिसमें पाया गया था कि डॉक्टरों को मरीजों से ठीक से बात करने का प्रशिक्षण देना जरूरी है। आईएमए की ही एक और रिसर्च में सामने आया था कि डॉक्टरों पर ज्यादातर हमले तब होते हैं, जब वे मरीज की अधिक जांच कराते हैं या देखने में देर लगाते हैं। इस बार के डॉक्टर्स डे पर आईएमए ने चिंता जताई है कि मेडिकल प्रफेशन की गरिमा दांव पर लगी हुई है। दरअसल चिकित्सा के क्षेत्र में हमला चौतरफा है। देश का मेडिकल एजुकेशन सिस्टम अपनी गिरती क्वॉलिटी को लेकर पिछले एक दशक से दुनिया भर के मीडिया का निशाना बना हुआ है। सन 2010 से 2016 तक 69 से अधिक मेडिकल कॉलेज और टीचिंग हॉस्पिटल नकल कराने और भर्ती में रिश्वत खाने में पकड़े गए हैं। देश के कुल 398 मेडिकल कॉलेजों में से हर छठे पर इस तरह के मामलों का मुकदमा चल रहा है। आईएमए का अनुमान है कि अभी देश में जितने लोग डॉक्टरी कर रहे हैं, उनमें लगभग आधों के पास इसकी पूरी ट्रेनिंग नहीं है। और तो और, फर्जी डिग्री बेचकर डॉक्टर बनाने का धंधा भी इसी देश में होता है। ऐसे में डॉक्टरों का डर भगाने के लिए व्यवस्था का फोकस अभी डर के ढांचागत कारणों को दूर करने पर होना चाहिए, लोगों में जवाबी डर पैदा करने पर नहीं।

हवा-हवाई और जमीनी सच

पद भले ही स्थिर हो, लेकिन प्रधानमंत्री अति भ्रमणशील हैं। जब से आए हैं, निरन्तर चलायमान हैं। पौशाकें धुलकर ठीक से सूखकर इस्तरी भी नहीं होतीं, उनमें पर्याप्त कड़कनेस भी नहीं आती कि फिर विश्व भ्रमण पर निकल पड़ते हैं। प्लेन का इंजन ठंडा भी नहीं होता और दौरा चालू हो जाता है। अब यह तो मुश्किल सवाल है कि हमारे पीएम हवा में कितने रहते हैं, जमीन पर कितने, देश में कितने, विदेश में कितने। भारत के पास जो सुपर कम्प्यूटर है, उससे डिजिटल इंडिया अभियान के तहत गणना करके शायद सटीक आंकड़े निकाले जा सकें। इससे अन्य ढेर सारे आंकड़े भी निकल आएंगे, मसलन-प्रधानमंत्री द्वारा विदेश में बोले गए शब्द, ली गई ऑक्सीजन की मात्रा, छोड़ी गई कार्बन डाइऑक्साइड, इतनी लाख बार स्माइल, हवा में हाथ हिलाने से होने वाला वाइब्रेशन, उससे पैदा होने वाला सम्मोहन आदि-आदि। एक कमांड पर ऐसा कम्प्यूटर तो यह भी बता देगा कि प्रधानमंत्री के भाषणों पर बजने वाली तालियों से उत्पन्न हुई ऊर्जा कितनी मेगावाट बिजली बना सकती थी। खैर, अभी मोटा अनुमान यह है कि वे जमीन से ज्यादा हवा में ही पाए जाएंगे, क्योंकि हर दो-चार दिन में किसी देश का न्योता आ जाता है। यह अच्छी बात है कि उनके पास विश्व भ्रमण के इतने न्योते आ रहे हैं। एक विश्व गुरुन्मुखी देश और उसके प्रधानमंत्री को और क्या चाहिए आखिर। एक देश का हैंगओवर उतरता नहीं कि सुपरमैन की तरह दूसरे देश में पहुंच जाते हैं।

सामाजिक सुरक्षा की दिशा में कदम

छद्म विवाह, बाल विवाह, बहु विवाह और पति द्वारा पत्नी का परित्या÷ करने जैसी प्रवृत्तियों की रोकथाम के साथ ही वैवाहिक विवादों और बच्चों की कस्टडी से संबंधित मामलों में महिलाओं को अनावश्यक परेशानियों से बचाने के इरादे से एक बार फिर सभी नागरिकों के लिये 30 दिन के भीतर विवाह का पंजीकरण कराना अनिवार्य करने का मुद्दा एक बार फिर चर्चा में है। वैसे तो देश में सिख समुदाय और जैन समुदाय में होने वाले विवाहों का पंजीकरण हिन्दू विवाह पंजीकरण कानून के अंतर्गत होता है। वहीं मुस्लिम, पारसी, ईसाई और यहूदी समाज में अलग-अलग कानून हैं। बड़ी संख्या में नवविवाहित दंपति विशेष विवाह कानून के तहत भी अपनी शादी का पंजीकरण कराते हैं। दुनिया के अधिकांश देशों में विवाह का पंजीकरण कराना अनिवार्य है। अपना देश बहुत बड़ा है और इसमें तमाम विविधताएं और रस्में हैं। लेकिन अभी भी विवाह के अनिवार्य पंजीकरण के बारे में कोई एकीकृत कानूनी व्यवस्था नहीं है। इसी कानूनी व्यवस्था के अभाव में अकसर महिलाएं ही छल का शिकार हो जाती हैं। विधि आयोग ने विवाह का पंजीकरण अनिवार्य करने के जन्म एवं मृत्यु कानून 1969 में उचित संशोधन करने की सिफारिश की है। आयोग का मत है कि विवाह के नाम पर महिलाओं को छले जाने से बचाने के लिये बेहतर होगा।

मानसून बाजार

जब आर्यावृत्त मानसूनी ऑफर्स के होर्डिंग्स से आच्छादित हो जाएं और लोगों को शॉपिंग के मैसेज आने लगें तो समझो मानसून आ गया। अब ऑफर्स ही मानसून की दस्तक है। वह महक है, जिसे नई पीढ़ी फौरन सूंघ लेती है। अब मानसून अरब सागर या बंगाल की खाड़ी के ऊपर से सिर उचकाकर भारतीय बाजार पर निगाह डाल अपने प्रस्थान का समय तसदीक करता है। मानसून भले ही किसी वर्ष आना भूल जाए, मगर बाजार वाला मानसून आना कभी नहीं भूलता। स्मार्ट फोन वाली पीढ़ी से पूछा जाए कि मानसून क्यों आता है, तो उनका यही जवाब होगा- हाय! ताकि हम खूब मानसून शॉपिंग कर सकें। रेन डांस पार्टी ऑर्गेनाइज कर सकें। पुराने गर्ल/ब्वॉय फ्रेंड बदल सकें और मानसून ऑफर्स में न्यू लांच स्मार्ट फोन खरीद कर और ज्यादा स्मार्ट हो सकें! यानी मानसून का आना अब एक इवेंट है। वीर बहूटियों का नहीं, मैचिंग के साथ कलरफुल छतरियों का निकलना है। पिकनिकी बहानों की खोज है। जीभ को स्वाद की आपूर्ति है। रेन डांस पार्टी का होना है। मेगा मानसून सेल का लगना है। नए प्रॉडक्ट का लॉन्च होना है। खरीद का बहाना है। थीम पार्टी का होना है। अब मानसून किसी की याद के रूप में नहीं सालता, बल्कि यह याद कसकती है कि हाय, पिछले मानसून ऑफर्स में कौन-से आइटम खरीदने से वंचित रह गए थे। संभव है, अब कम्पनियां यह मानसूनी स्कीम भी ले आएं कि हमारे फलां तेल, शैम्पू, क्रीम, मैगी, कोल्ड ड्रिंक्स, मोबाइल, डीओ, स्मार्ट फोन, रेजर, ब्लेड, ऑफ्टर शेव लोशन का इस्तेमाल करें और अपने भीतर मानसूनी थ्रिल जगाएं! हां, अब कोई भी अवसर बिना प्रॉडक्ट में तबदील हुए नहीं आता और उसे खरीदे बिना महसूस नहीं किया जा सकता। हो सकता है, कोई टूर कम्पनी यह स्कीम लॉन्च भी कर दे कि मानसून की फ्रेंचाइजी हमारे पास है, हम लेकर जाएंगे वहां, मानसून उठता है जहां! दूसरी कम्पनी बीच में कूद पड़े, आप मानसून भले ही किसी और कम्पनी का इस्तेमाल करें, मगर हमारे डीओ, परफ्यूम लगाए बिना उसे महसूस नहीं कर सकेंगे। कोई तीसरा कूदकर कह देगा कि मानसून जिस समुद्र से उठता है, वही हमने लीज पर ले लिया है!

संकल्प की जीत

रूस में जार का शासन था। तभी यहूदी परिवार में जन्मे एजिलर बेन यहूदा वहां यहूदियों के सम्मान के लिए चल रहे आन्दोलन में शामिल हो गये। बेन ने हिब्रू को यहूदियों के आपसी संवाद की भाषा बनाने का विचार लोगों के सामने रखा। शुरू में लोगों ने उसके इस विचार का उपहास उड़ाया पर बेन इन प्रतिक्रियाओं से हताश नहीं हुआ। सबसे पहले उसने यहूदियों के भाषाई स्वाभिमान को जगाने का प्रयास किया और दूसरी ओर सामान्य बातचीत के लिए हिब्रू के वाक्य विकसित करने की कोशिश की। उनकी निष्ठा रंग लाई। हिब्रू भाषा को जीवित करने के लिए पहले एक समिति बनाई गई, पर कार्य की गुरुता का अनुमान लगने पर एक अकादमी का गठन किया गया। वर्ष 1948 में इस्राइल राष्ट्र के उदित होने पर बेन यहूदा के संकल्प को एक नया आयाम मिल गया। हिब्रू इस्राइल की राजभाषा बन गई।

दान का ज्ञान

एक बार एक सेठजी ने महात्मा गांधी से शिकायत भरे स्वर में कहा-बापू देखिए, दुनिया कितनी बेईमान है। मैंने 50 हजार रुपए एक धर्मशाला बनवाने में दिये। अब धर्मशाला बन जाने पर मुझे ही उसकी प्रबंध समिति से अलग कर दिया गया है। जब तक वह नहीं बनी थी तब तक वहां कोई भी नहीं आता था और अब बन जाने पर पचासों उस पर अधिकार जताने वाले आ गए हैं। यह सुन कर बापू कुछ देर सोचते रहे, फिर बोले-आपको इसलिए निराशा हो रही है क्योंकि आपने दान का सही अर्थ नहीं समझा है। किसी चीज को देकर कुछ पाने की इच्छा दान नहीं है, वह तो व्यापार है और जब आपने व्यापार किया है तो आपको लाभ और हानि दोनों के लिए तैयार रहना चाहिए। व्यापार में लाभ भी हो सकता है और हानि भी।

राशिफल

मेष- राशि का स्वामी मंगल-पापग्रहों की संगति में है। कड़वाहट को मिठास में बदलने की कला आपको सीखनी पड़ेगी। शाम के समय कोई रूका काम बन सकता है। रात्रि का समय प्रियजनों से भेंट व आमोद-प्रमोद में बीतेगा।

वृष- आज का दिन संतोष और शान्ति का है। राजनैतिक क्षेत्र में किए गए प्रयासों में सफलता मिलेगी। सत्ता से गठजोड़ का लाभ मिल सकता है। पद, प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

मिथुन- राशि स्वामी की व्यग्रता के कारण किसी मूल्यवान वस्तु के खोने या चोरी होने का भय बना रहेगा। सांय काल में कोई रुका कार्य पूरा होगा।

कर्क- चन्द्रमा पंचम भाव में उत्तम संपत्ति का संकेत कर रहा है। आजीविका के क्षेत्र में प्रगति होगी। राज्य-मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। यात्रा, देशाटन की स्थिति सुखद व लाभदायक रहेगी।

सिंह- आमदनी के नए स्रोत बनेंगे। वाणी की सौम्यता आपको सम्मान दिलाएगी। शिक्षा, प्रतियोगिता में विशेष सफलता मिलेगा। शत्रु आपस में लड़कर ही नष्ट हो जाएंगे।

कन्या- रोजगार व्यापार के क्षेत्र में जारी प्रयासों में अकल्पनीय सफलता प्राप्त होगी। दोपहर बाद कानूनी विवाद या मुकदमों में जीत मिलेगी। खर्च व कीर्ति की वृद्धि होगी।

तुला- आज आपके चारों ओर सुखद वातावरण रहेगा। कई दिनों से चली आ रही लेन-देन की समस्या हल हो सकती है। पर्याप्त मात्रा में धन प्राप्त होगा। विरोधियों का पराभव होगा।

वृश्चिक- आपकी राशि पर शनि एवं द्वितीय चन्द्रयोग अभी 7 दिन और चलेगा। सेहत से जुड़ी कुछ समस्याएं हो सकती हैं। ध्यान रखने की आवश्यकता है। स्वास्थ्य पर धन खर्च हो सकता है।

धनु- आज आपके विरोधी भी आपकी प्रशंसा करेंगे। सत्ता पक्ष से निकटता व गठजोड़ का लाभ भी मिलेगा। ससुराल पक्ष से पर्याप्त मात्रा में धन हाथ लग सकता है।

मकर- आज आर्थिक मामलों में सफलता मिलेगी। आजीविका के क्षेत्र में चल रहे नए प्रयास फलीभूत होंगे। अधीनस्थ कर्मचारियों का आदर व सहयोग मिलेगा। विवाद से बचें।

कुंभ- राशि का स्वामी शनि क्योंकि वक्री उदय चल रहा है। अकारण विवाद से कार्यों में हानि होगी। कोई विपरीत समाचार सुनकर यात्रा पर जाना पड़ सकता है। इसलिए सावधान रहें और झगड़े/विवाद से बचें।

मीन- आज बहनोई और साले से आज लेन-देन न करें सम्बन्ध खराब होने का खतरा है। धार्मिक यात्रा और पुण्य कार्यों पर खर्चा हो सकता है। यात्रा में सावधान रहें। बृहस्पति का त्रिकोण योग मूल्यवान वस्तुएं चोरी करा सकता है।

शब्द सामर्थ्य Shabd Samarth

बाएं से दाएं
1. सपा प्रमुख 6. चलने की क्रिया या तरीका, गति, आचरण, दांव 7. आंख, नेत्र 9. ज्वर, गुबार 10. मसलना, पीसना 11. बेसबब, व्यर्थ, बेवजह 12. मां की मां 13. हिरण्यकश्यप का पुत्र जो परम हरिभक्त था 15. भारत का राष्ट्रीय ध्वज 17. दुर्ग, किला, मुख्य स्थान 18. दासी, बांदी 19. भारत का राष्ट्रीय फूल 20. कयामत, तबाही।

ऊपर से नीचे
1. मुस्कुराहट, तबस्सुम 2. विश्वास, प्रतीति 3. खेतों को सींचने का कार्य, छिड़काव 4. खेज जोतने का यंत्र, समाधान 5. औषधालय 8. कमलरोग से ग्रसित व्यक्ति 9. बुल्ला, बुदबुदा 11. गैरजरूरी 13. बहुत अधिक, गाढ़ा, घना 14. रहम करने योग्य, दया के योग्य 16. वर्ण, 'कलर' 18. बीता हुआ या आने वाला दिन।

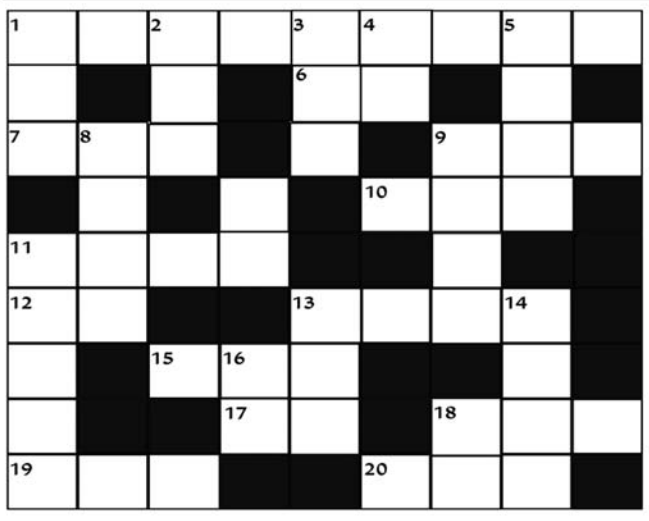

पिछले अंक का हल

उ	पा	धि				न		फ
प		क्का			पा	य	दा	न
ना	ग	र		दो	ल	न		का
म	जा		पु	स्त	क		बै	र
	न		का			सि	रा	
जा	न	व	र			त	ग	ड़ा
दू		सं		र	क	म		
ग	ल	त	फ	ह	मी		ज	ख्मी
र	ट			ट	ना	ट	न	

सू-दोकू

	6	3		8		1		4
8			3		4		7	
	4			5		8		
3		8			1		4	
	1			4		9		7
		4			2		1	
1				3		4		8
	8		2		9		3	
		9		1		2		5

नियम
1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गों का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.03 का हल

6	7	9	2	4	5	3	1	8
2	1	8	3	7	6	9	5	4
7	6	4	5	2	8	1	3	9
3	8	1	6	9	7	2	4	5
9	2	5	4	1	3	8	6	7
8	3	7	9	6	4	5	2	1
5	4	2	8	3	1	7	9	6
1	9	6	7	5	2	4	8	3
4	5	3	1	8	9	6	7	2